कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

DOWNLOAD MISSION GYAN APP
कक्षा 10
e कक्षा By Mission Gyan
YouTube
भारत और समकालीन विश्व - 2
अध्याय–5
मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया
NCERT
मुद्रण की शुरुआत
RBSE
Jinender Soni
Founder - Mission Gyan

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

- मुद्रित या छपी हुई सामग्री के बग़ैर दुनिया की कल्पना हमारे लिए बहुत मुश्किल है!
- हम अपने चारों तरफ़ जहाँ नज़र दौड़ाएँ, हमें कोई न कोई छपी हुई चीज़ दिखाई देगी।
- किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ, अख़बार, कलैंडर, डायरी, सरकारी सूचनाएँ सब छपी हुई चीजें हैं।
- इसके अलावा मेज पर पड़े नाटक के प्रोग्राम, मशहूर तसवीरों की नकलें, सड़क के किनारे लगे विज्ञापन और सिनेमा के पोस्टर आदि-आदि अनेक छपी हुई चीजें हम चारों ओर देखते हैं।
- हम छपा हुआ साहित्य पढ़ते हैं।
- पेंटिंग देखते हैं, अखबार पढ़ते हैं।
- सार्वजनिक दुनिया में चल रहे तमाम विवादों का जायज़ा लेते हैं।
- हम मुद्रित दुनिया के अस्तित्व को मानकर चलते हैं, यह सोचने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती कि छपाई के पहले भी एक दुनिया थी।
- हम शायद ही महसूस करते हैं कि छपाई का अपना एक इतिहास है, तथा इसी इतिहास ने हमारे समकालीन ज़माने को आकार दिया है।
- इस अध्याय में हम मुद्रण के इसी इतिहास को देखेंगे।
- साथ ही हम इस इतिहास से यह भी जानेंगे कि किस प्रकार से मुद्रण का कार्य पूर्वी-एशिया से शुरू होकर यूरोप और भारत में फैला।
- इससे सामाजिक जीवन में आए बदलाव से भी जोड़कर समझने की कोशिश करेंगे।

प्रिंट के आने से पहले पुस्तक-निर्माण,
(अखलाक-ए-नसीरी, 1595 से)



- भारत का एक शाही वर्कशॉप है।
- भारत में छपाई आने से काफ़ी पहले का है।
- यहाँ पर पाठ को पहले बोलकर लिखाया जा रहा है, फिर तस्वीर बनाई जा रही है।
- पुस्तक-निर्माण में सुलेखन और चित्रकारी का बहुत महत्त्व था।
- छापेखाने के आने के बाद इन कलाओं का क्या हुआ, यह सोचने लायक है।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

शुरूआती छपी किताबें

- मुद्रण की सबसे पहली तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई।
- यह छपाई हाथ से होती थी।
- तक़रीबन 594 ई. से चीन में काठ के ब्लॉक या तख़्ती पर स्याही लगाकर काग़ज़ को उस पर रगड़कर किताबें छापी जाने लगी थीं।
- चूँकि पतले, छिद्रित काग़ज़ के दोनों तरफ़ छपाई संभव नहीं थी।
- इसलिए पारंपरिक चीनी किताब 'एकॉर्डियन' शैली में, किनारों को मोड़ने के बाद सिल कर बनाई जाती थी।
- किताबों का सुलेखन करनेवाले लोग दक्ष सुलेखक या खुशख़त होते थे।
- ये हाथ से बड़े सुंदर-सुडौल अक्षरों में सही-सही कलात्मक लिखाई करते थे।

चीन में 16वीं शताब्दी तक :-

- एक लंबे अरसे तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक चीनी राजतंत्र था।
- सिविल सेवा परीक्षा से नियुक्त चीन की नौकरशाही भी विशालकाय थी।
- चीनी राजतंत्र इन परीक्षाओं के लिए बड़ी तादाद में किताबें छपवाता था।
- 16वीं सदी में परीक्षा देने वालों की तादाद बढ़ी, लिहाज़ा, छपी किताबों की मात्रा भी उसी अनुपात में बढ़ गई।

17वीं सदी में चीन में :-

- 17वीं सदी तक आते-आते चीन में शहरी संस्कृति के फलने-फूलने से छपाई के इस्तेमाल में भी विविधता आई।
- अब मुद्रित सामग्री के उपभोक्ता सिर्फ़ विद्वान और अधिकारी नहीं रहे।
- व्यापारी अपने रोज़मर्रा के कारोबार की जानकारी लेने के लिए मुद्रित सामग्री का इस्तेमाल करने लगे।
- पढ़ना एक शग़ल भी बन गया।
- नए पाठक वर्ग को काल्पनिक क़िस्से, कविताएँ, आत्मकथाएँ, रूमानी नाटक तथा शास्त्रीय एवं साहित्यिक कृतियों के संकलन पसंद थे।
- अमीर महिलाओं ने भी पढ़ना शुरू किया और कुछ ने स्वरचित काव्य और नाटक भी छापे।
- पढ़ने की यह नयी संस्कृति एक नयी तकनीक के साथ आई।
- 19वीं सदी के अंत में पश्चिमी शक्तियों द्वारा अपनी चौकियाँ स्थापित करने के साथ ही पश्चिमी मुद्रण तकनीक और मशीनी प्रेस का आयात भी हुआ।
- पश्चिमी शैली के स्कूलों की ज़रूरतों को पूरा करने वाला शंघाई प्रिंट-संस्कृति का नया केंद्र बन गया।
- हाथ की छपाई की जगह अब धीरे-धीरे मशीनी या यांत्रिक छपाई ने ले ली।

जापान में मुद्रण :-

- चीनी बौद्ध प्रचारक 768-770 ई. के आसपास छपाई की तकनीक लेकर जापान आए।
- जापान की सबसे पुरानी छपी, पुस्तक 'डायमंडसूत्र' है, जो 868 ई. में छपी।
- इसमें पाठ के साथ-साथ काठ पर खुदे चित्र हैं।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

डायमंड सूत्र का एक पन्ना

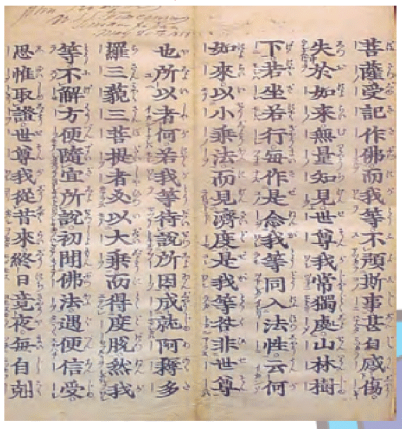

- तसवीरें अकसर कपड़ों, ताश के पत्तों और काग़ज़ के नोटों पर बनाई जाती थीं।
- मध्यकालीन जापान में कवि भी छपते थे और गद्यकार भी, तथा किताबें सस्ती और सुलभ थीं।
- 18वीं सदी के अंत में, एदो (वर्तमान में तोक्यो) के शहरी इलाक़े की चित्रकारी में शालीन शहरी संस्कृति का पता मिलता है।
- तोक्यो की इस चित्रकारी में हम चायघर के मजमों, कलाकारों, और तवायफ़ों को देख सकते हैं।
- हाथ से मुद्रित तरह-तरह की सामग्री – महिलाओं, संगीत के साज़ों, हिसाब-किताब, चाय अनुष्ठान, फूलसाज़ी, शिष्टाचार और रसोई पर लिखी किताबों – से पुस्तकालय एवं दुकानें अटी पड़ी थीं।

कितागावा उतामारो :-

- 1753 ई. में एदो में पैदा हुए उतामारो ने उकियो (तैरती दुनिया के चित्र) नाम की एक नयी चित्रकला शैली में अहम योगदान किया,
- जिसमें आम शहरी जीवन का चित्रण किया गया।
- इनकी छपी प्रतियाँ यूरोप और अमेरिका पहुँची और मानेमोने और वानगॉग जैसे चित्रकारों को प्रभावित किया।
- त्सुताया जुज़ाबूरो जैसे प्रकाशकों ने विषय चुनकर कलाकारों से उन पर चित्र बनाने का क़रार किया।
- फिर चित्रकार विषय की रूपरेखा बनाते थे।
- इसके बाद हुनरमंद वुडब्लॉक शिल्पी, चित्रकार द्वारा बनाई गई रूपरेखा को तख़्ती पर चिपकाकर उसकी आकृति को उकेर लेते थे।
- इस प्रक्रिया में मूल आरेख तो ग़ायब हो जाता था, पर उसकी छपी नक़ल बच जाती थी।



कितागावा उतामारो की एक उकियों रचना

सुबह का नजारा



रचयिता : शून्मन कुबों, 18वीं सदी के अंत में

Download Mission App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

त्रिपीटिका कोरियाना

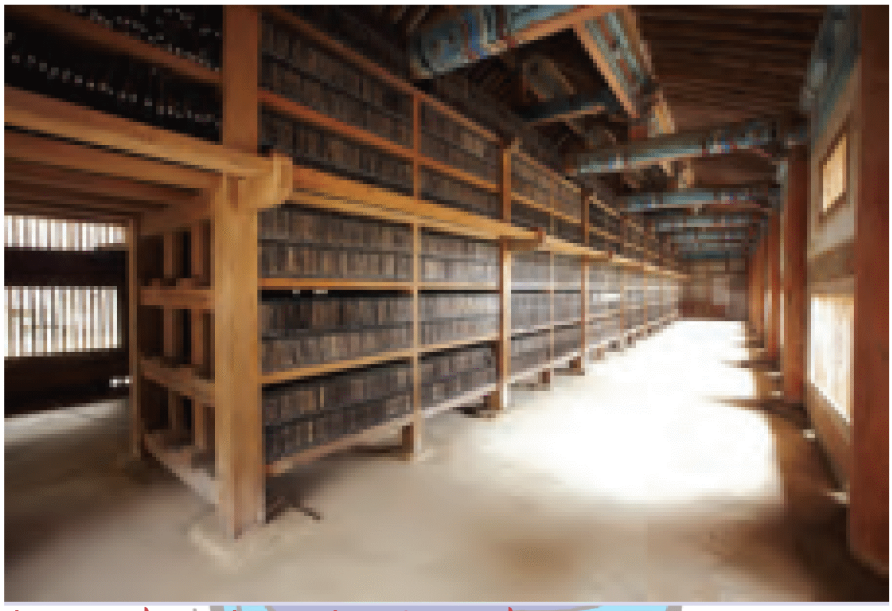

- त्रिपीटका कोरियाना, बौद्ध ग्रंथों का कोरियाई संग्रह है।
- इसे 13वीं शताब्दी के मध्य में वुडब्लॉक्स मुद्रण के द्वारा संग्रह किया गया था।
- इन ग्रंथों को लगभग 80,000 वुडब्लॉक्स पर उकेरा गया था।
- इन्हें 2007 में यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में अंकित किया गया।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here